भगवान शिव के गुणों पर ध्यान

विज्ञानभैरव से एक धारणा

विज्ञानभैरव, काश्मीर शैवदर्शन के ऋषियों द्वारा अत्यन्त सम्मानित एक ग्रन्थ है। इस संस्कृत ग्रन्थ में ११२ धारणाएँ [ध्यान एकाग्र करने की तकनीकें या विधियाँ] हैं जो भैरव रूप में भगवान शिव ने अपनी अर्धांगिनी, देवी भैरवी के समक्ष प्रकट कीं; भगवती भैरवी को शक्ति भी कहा जाता है। ये धारणाएँ ध्यान में उतरने के लिए अपने अवधान को केन्द्रित करने हेतु सम्बल प्रदान करती हैं।

ध्यान में प्रवेश करते हुए, अपने बोध को केन्द्रित करने हेतु
इस धारणा में दिए गए अभिकथनों को दोहराएँ

परमेश्वर सर्वज्ञ, सर्वकर्ता और सर्वव्यापक हैं।
"स्वाभाविक रूप से, मैं शिव के गुणों का मूर्तरूप हूँ; मैं शिव हूँ,"
इस बोध को धारण करने से साधक वास्तव में शिव हो जाता है।

[अभिकथन—वे कथन जिन्हें जागरूकता के साथ बार-बार दोहराया जाता है ताकि वे हमारी चेतना में पैठ जाएँ।]

विज्ञानभैरव १०९; अंग्रेज़ी भाषान्तर © २०१७ एस.वाय.डी.ए. फ़ाउन्डेशन®।

© २०१७ एस.वाय.डी.ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।